IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नैतिक शिक्षा और आलोचनात्मक चिंतन का समावेश: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

**महाबीर सिंहशोधार्थी(शिक्षाशास्त्र)**

**मानविकीएवंसामाजिक विज्ञान विभाग निम्सविश्वविद्यालय, राजस्थान, जयपुर**

**डॉ. रश्मिद्विवेदी**

**सहायक प्रोफेसर एवंविभागाध्यक्ष**

**मानविकीएवंसामाजिक विज्ञान विभाग निम्सविश्वविद्यालय, राजस्थान, जयपुर**

## षोध आलेख सार

शिक्षा को मानव विकास के लिए बहुत आवश्यक माना जाता है। शिक्षा प्रत्येक राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा है। इससे न केवल व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है, बल्कि प्रत्येक राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण भी होता है तथा उसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित किया जाता है। राष्ट्र का निर्माण शिक्षा के माध्यम से होता है। स्वतंत्रता के समय भारत की शिक्षा प्रणाली तत्कालीन देशभक्तों के जीवन दर्शन और वैदिक शिक्षा प्रणाली से प्रभावित थी। तब शिक्षा प्रणाली में भारतीयता, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय सुरक्षा, नैतिकता और मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान था। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारतीय भावनाओं, मूल्यों और मानकों के लिए कोई स्थान नहीं रहा। इसका मुख्य कारण पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव था। भारतीय शिक्षा प्रणाली पश्चिमी शिक्षा से प्रभावित रही, जिसका राष्ट्र के मानव जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ा। व्यक्तियों में प्रतिस्पर्धा, वैमनस्य, घृणा, ईर्ष्या आदि भावनाएँ तेजी से विकसित होने लगीं, जिसके कारण नैतिकता और मूल्यों का क्षरण होने लगा। परिणामस्वरूप, समय-समय पर एक आदर्श नई

शिक्षा प्रणाली को आकार देने की आवश्यकता महसूस की गई। स्वतंत्रता के पश्चात राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 को आकार दिया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन कर शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा देना था। भारतीय संविधान के अंतर्गत अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा के प्रावधान के साथ ही एक और नई शिक्षा नीति 1986 को आकार दिया गया, जिसकी स्थिरता वर्तमान समय तक बनी हुई है। इस नीति का लक्ष्य राष्ट्रीय विकास के लिए प्रतिबद्ध, चरित्रवान और कुशल युवक-युवतियों को तैयार करना था। शिक्षा नीति 1986 की समीक्षा के बाद भारत के शिक्षा ढांचे में तीसरा बड़ा सुधार नई शिक्षा नीति 2020 के रूप में हुआ, जिसका उद्देश्य भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भारतीय परम्पराओं, भारतीय मूल्यों, राष्ट्रीय मूल्यों और राष्ट्रीय सुरक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, और इस नीति में संपूर्ण राष्ट्र के शैक्षणिक संस्थानों में कियान्वित करने का प्रयास जारी है। वर्तमान शिक्षा नीति के माध्यम से हम अपनी आने वाली पीढ़ी को राष्ट्र की अस्मिता परंपरागत मूल्यों व परंपराओं से अवगत करा सकेगें। यह शिक्षा नीति भारतीयता की भावना से परीपूर्ण है जो युवाओं में नैतिकता व मूल्यों का विकास करने में सहायक सिद्व होगी। प्रस्तुत शोध राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित नैतिकता व मूल्यों के स्वरूप को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। जो 21 वीं सदी के समस्त शैक्षिक समस्याओं के समाधान का उच्चोतर मार्ग ह। इस नीति के द्वारा छात्रों के नैतिक मूल्यों के साथ–साथ उनके सर्वागीण विकास पर बल दिया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **का अर्थ** भारत की शिक्षा प्रणाली **के आधुनिकिकरण सुधार और विनियमन के लिए सरकार** द्वारा तैयार की गई एक राष्ट्रीय नीति है। इसका उद्देश्य सभी को उच्च गुणवत्ता वाली और समान शिक्षा प्रदान करके भारत को ज्ञान आधारित समाज में बदलना है। यह नीति प्राथमिक से लेकर उच्च **शिक्षा** तक की शिक्षा को कवर करती है तथा इसमें समग्र विकास नवाचार और 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप शैक्षिक संरचना में परिवर्तन शामिल है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तीन मुख्य संस्करण रहे हैं **जो** क्रमशः **1968, 1986** और **2020** में लागू किया गया था।

एनईपी **2020** को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा **29** जुलाई **2020** को मंजूरी दी गई थी और **इसे लागू करने की** प्रक्रिया अलग-अलग राज्यों द्वारा अलग-अलग समय पर शुरू की गई थी।

**1968** की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति कोठारी आयोग की सिफारिश पर आधारित थी और इंदिरा गांधी के कार्यकाल के दौरान लागू की गई थी इसके अध्यक्ष दौलत सिंह कोठारी थे।

1986 की शिक्षा नीति की समीक्षा समिति की अध्यक्षता आचार्य राममूर्ति ने की थी और इसे राजीव गांधी के कार्यकाल के दौरान लागू किया गया था बाद में 1992 में इसमें संशोधन किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की **मसौदा** समिति की अध्यक्षता डॉ. के. कस्तूरीरंगन ने की। इसे 29 जुलाई 2020 को श्री नरेन्द्र मोदी के वर्तमान कार्यकाल के दौरान लागू किया गया।

12 जुलाई 2022 से शुरू होने वाले एनईपी 2020 को लागू करने वाला पहला राज्य उत्तराखंड था। इसके बाद कर्नाटक ने शैक्षणिक वर्ष 2021–2022 से एनईपी 2020 को लागू किया। मध्य प्रदेश एनईपी 2020 को लागू करने वाला दूसरा राज्य बन गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी **समतामूलक** और लचीला बनाने पर केंद्रित है जिसमें 5+3+3+4 **का नया** पाठ्यक्रम ढांचा मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर जोर और प्रौद्योगिकी- **समेकित** शिक्षा को बढ़ावा देना शामिल है। इसका उद्देश्य 21वीं सदी के कौशल विकास और उच्च शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना है...

**स्कल नामांकन अनुपात को 2035 तक 50 प्रतिशत तक बढ़ाना है। नया पाठ्यक्रम ढ़ाचा 10+2 पैटर्न को बदलकर 5+3+3+4 का नया ढ़ाचा अपनाया गया है। जो 18 वर्ष के उम्र के बच्चों का कवर करता है।**

| | |
|---|---|
| **फाउडेंशनल स्टेज** | **5वर्ष (3–8 वर्ष)** |
| **प्रीपरेटरी स्टेज** | **3 वर्ष (8–11 वर्ष)** |
| **मिडिल स्टेज** | **3 वर्ष (11–14 वर्ष)** |
| **संकेडरी स्टेज** | **4 वर्ष (14–18 वर्ष)** |

**इस नीति का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बच्चे कम से कम कक्षा 5 तक बुनियादी गणित साक्षरता कौशल सीखे। कम से कम कक्षा 5 तक छात्रों को मात्र भाषा स्थानीय भाषा या क्षेत्रिय भाषा में पढाया जायेगा।** आलोचनात्मक सोच रचनात्मकता और समस्या समाधान जैसे कौशल विकसित करने पर जोर दिया गया है। केवल परीक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय छात्रों के समग्र विकास पर नजर रखी जाएगी। व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाएगा तथा प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण विधियों को प्रोत्साहित किया जाएगा। उच्च शिक्षा में नामांकन बढ़ाने तथा विद्यार्थियों को अपनी पसंद के विषय चुनने की अधिक स्वतंत्रता देने के लिए प्रवेश एवं

निकासी नियमों को लचीला बनाया जाएगा। छात्रों के लिए एक क्रेडिट स्थानांतरण प्रणाली स्थापित की जाएगी ताकि वे विभिन्न संस्थानों के बीच अपने क्रेडिट स्थानांतरित कर सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020** के पांच स्तंभ हैं - पहुंच समानता गुणवत्ता सामर्थ्य और जवाबदेही। इन स्तंभों का उद्देश्य एक समग्र लचीली और बहु-विषयक शिक्षा प्रणाली विकसित करना है जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। इसमें प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करना शामिल है। सभी विद्यार्थियों विशेषकर वंचित समूहों को शिक्षा **को सभी वर्गों के लिए लाभदायक बनाना है।**

अध्ययन के उद्देश्यः

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020** के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020** के लक्ष्यों और सिद्धांतों के **विषय में जानना**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020** में दिए गए मूल्यों और नैतिकता को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने का प्रयास करना।

## प्रस्तावनाः—

भारत प्राचीन काल से ही विश्व गुरु रहा है। **अपने** उच्चस्तरीय शिक्षण संस्थानों **जैसे नालंदा तक्षशिला आदि के बल पर इसकी** ख्याति पूरे विश्व में थी। देश-विदेश से छात्र यहां शिक्षा प्राप्त करने आते थे। शैक्षणिक संस्थान **वो** केन्द्र बिन्दु हैं जहां से राष्ट्र का निर्माण और विनाश दोनों संभव है। शिक्षा में हर समय नये प्रयोग करके विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता रहा है। संभवतः इस क्षेत्र में भी उतने ही प्रयोग हुए हैं जितने किसी अन्य क्षेत्र में। समय के साथ प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई बदलाव हुए हैं। लेकिन फिर भी ऐसा लगता है कि हर बार कुछ न कुछ छूट जाता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020** में इस अंतर को भरने का प्रयास किया गया है।

**21**वीं सदी में मानव जीवन प्रगति के **उच्चतम** शिखर पर है। मानव जीवन में बढ़ते औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के समावेश से मनुष्य प्रगति कर रहा है लेकिन प्रतिस्पर्धा की भावना तेजी से बढ़ रही है। व्यक्तियों के बीच संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता बढ़ रही है जिसके कारण संस्कृति सभ्यता जाति धर्म समुदाय और संप्रदाय आदि के बीच भी टकराव बढ़ रहा है। इसका मुख्य कारण शिक्षा का गिरता स्तर है। आज हम देखते हैं कि विद्यार्थी नैतिक

मूल्यों से दूर होते जा रहे हैं। वे न तो अपने माता-पिता का पूरा सम्मान करते हैं और न ही अपने शिक्षकों के प्रति पूरी तरह समर्पित होते हैं। आज दिन-प्रतिदिन हिंसक आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ती जा रही हैं। अनियंत्रित विज्ञान और तकनीकी दौड़ न केवल मानव सभ्यता बल्कि मानव अस्तित्व के लिए भी खतरा बन रही है।

सभी विकसित और विकासशील देश अपने विकास और आर्थिक क्षमताओं पर गर्व करते हैं लेकिन जटिल कोविड-**19** वायरस ने दुनिया के सभी बुद्धिजीवियों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। इससे यह सिद्ध होता है कि संसाधनों की पूर्ति और विश्व में व्याप्त गरीबी के बीच लगातार बढ़ती खाई ने मानव में निराशा अवसाद अकेलापन लक्ष्यहीनता भ्रमित मूल्य प्रणाली आदि नकारात्मक गुणों का विकास किया है जो मूल्यों के विनाश का कारक बनते हैं। आज व्यक्ति में भारतीय भावनाओं मूल्यों आदर्शों और मानदंडों के लिए कोई स्थान नहीं रह गया है जिसके परिणामस्वरूप भारत की मूल्यविहीन शिक्षा प्रणाली को नया रूप देने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

ऋग्वेद के अनुसार प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण से शिक्षा वह है जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर और निःस्वार्थ बनाती है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही **शिक्षा है।**

अरस्तू के अनुसार शिक्षा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण है।

महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर मन और आत्मा के सर्वांगीण और सर्वोत्तम विकास से है।

मार्टिन लूथर के अनुसार बुद्धि और चरित्र सच्ची शिक्षा के लक्ष्य हैं। इसके अलावा सी. वो गुड ने लिखा है कि मूल्य एक **चारित्रिक** विशेषता है जिसे मनोवैज्ञानिक सामाजिक और सौंदर्य **बोध की** दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। यह स्पष्ट है कि वे मूल्यों **के** सकारात्मक **पक्ष पर विश्वास प्रकट किया है।**

सी.एस. लुईस ने भी मूल्यों पर अपनी राय देते हुए कहा है कि मूल्यों के अभाव में शिक्षा की उपयोगिता व्यक्ति को अधिक चालाक-दुष्ट बनाने मात्र तक सीमित रह जाती है।

रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार उन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों को व्यक्ति के समग्र विकास के रूप में वर्णित किया जिसमें प्रकृति और समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करना और सामुदायिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करना शामिल है।

मूल्य शिक्षा और नैतिक शिक्षा दोनों ही व्यक्ति के चरित्र निर्माण और सही-गलत की समझ से संबंधित हैं जबकि मूल्य शिक्षा जीवन की प्राथमिकताओं और सांस्कृतिक भावनात्मक मूल्यों पर केंद्रित होती है। नैतिक शिक्षा सही और गलत के व्यावहारिक निर्णयों पर केंद्रित होती है।

चाणक्य के अनुसार पलायन व निर्माण दोनों ही गुरु की गोद में खेलते हैं। शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और जिम्मेदारी बनाए रखने की क्षमता विकसित करे ताकि वे अच्छी जीवनशैली अपना सकें नागरिक के रूप में सक्रिय भूमिका निभा सकें और मूल्य शिक्षा के माध्यम से अपनी प्रतिभा और कौशल का अधिकतम उपयोग कर सकें।

मूल्य और नैतिकता हमारी भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं जिन्हें नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से विश्व पटल पर गौरव और गरिमा के साथ पुनः स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही भारतीय भाषाओं को महत्व देते हुए वर्तमान समय में तकनीकी चिकित्सा एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों सहित अन्य पाठ्यक्रमों में भारतीय भाषा को एक विकल्प के रूप में लिया गया है। भारतीय विचारधारा और संस्कृति से संबंधित विषयों को शामिल करने का उद्देश्य छात्रों में विधार्थियों में भारतीय विचारधारा का विकास करना और हमारी संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करना है। यह नीति मनुष्य को मूल्यों व नैतिकता युक्त संतुलित और सुखी जीवन जीने में मदद करती है। इस नीति के माध्यम से व्यक्ति में अहिंसा प्रेम सहिष्णुता समानता और भाईचारे की भावनाओं को विकसित करके राष्ट्रीय एकता और अखंडता स्थापित की जा सकती है। मूल्य और नैतिकता मानव जीवन को निम्नलिखित तरीकों से आसान सुखद और आनंदमय बनाने में मदद करते हैं:

वे व्यक्ति में देशभक्ति की भावना और एक अच्छे नागरिक के गुण विकसित करते हैं।

ये मूल्य एक लोकतांत्रिक और जन-हितैषी गठबंधन को बढ़ावा देते हैं।

उनमें विभिन्न धर्मों भाषाओं संस्कृतियों संप्रदायों और विश्वासों के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है।

वे रूढ़िवादी और संकीर्ण सोच को खत्म करते हैं।

वे व्यक्ति में ईमानदारी जिम्मेदारी करुणा प्रेम सहिष्णुता भाईचारा समता समानता आदि गुणों का विकास करते हैं।

वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे की भावनाओं को बढ़ावा देते हैं।

इनके माध्यम से व्यक्ति के शारीरिक मानसिक भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं का विकास होता है तथा उसका सर्वांगीण विकास होता है।

वसुधैव कुटुम्बकम की भावना विकसित करके राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया जाता है।

हमारे जीवन में मूल्यों और नैतिकता का बहुत महत्व है। जैसा व्यक्ति सोचता है वैसा ही उसका व्यवहार होता है। शिक्षा अच्छे विचारों को जन्म देती है और कुविचारों का नाश करती है। यदि किसी व्यक्ति में अनैतिक विचारों का जन्म होता है तो उसे शिक्षा द्वारा ही सुधार किया जा सकता है शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्रकी एकता व अखंडता को बनाए रखा जा सकता है। इन्ही उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को आदर्श स्वरूप प्रदान कर एक बार पुनः नैतिकता व मूल्यों की स्थापना की गई है जिसमें विशेषकर भारतीय मूल्यों एवं परमपराओं का समावेश किया जा सकता है।

प्रमुख चुनौतियाँ:

कार्यान्वयन की जटिलता: भारत की विशाल शिक्षा प्रणाली में एक साथ नीति को लागू करना एक बड़ी चुनौती हैए जिसके लिए केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय की आवश्यकता है।

बुनियादी ढांचे का अभाव: डिजिटल शिक्षा पर जोर देने के बावजूदए कई ग्रामीण और दूरदराज के स्कूलों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल उपकरणों का अभाव हैए जिससे डिजिटल विभाजन पैदा हो रहा है।

शिक्षक प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण: नए शिक्षण विधियोंए प्रौद्योगिकी और मूल्यांकन प्रणालियों को अपनाने के लिए बड़े पैमाने पर शिक्षकों को प्रशिक्षित करना एक बड़ी चुनौती है।

पाठ्यक्रम का बोझ: नीति में विषयों के लचीलेपन के बावजूदए कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि पाठ्यक्रम अभी भी छात्रों के लिए बहुत बोझिल हैए जिससे पढ़ाई का दबाव बढ़ रहा है।

राज्यवार भिन्नता और विरोध: शिक्षा राज्य का विषय होने के कारण तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों ने त्रि-भाषा फार्मूले और अन्य प्रावधानों का विरोध किया हैए जिससे एकरूपता प्राप्त करना कठिन हो गया है।

संक्षेप में: एनईपी का दूरदर्शी लक्ष्य सराहनीय हैए लेकिन भारत की विविधता और विशालता के कारण इसे जमीनी स्तर पर लागू करना एक कठिन और बहुआयामी चुनौती है जिसके लिए निरंतर प्रयास और संसाधनों की आवश्यकता है।

संभावनाएँ:

समग्र और लचीली शिक्षा: 10़2 प्रणाली को 5़3़3़4 संरचनाए जिससे 3.8ए 8.11ए 11.14ए और 14.18 आयु समूहों के लिए शिक्षा अधिक व्यवस्थित हो सकेगी ।

रटने से मुक्ति: बोर्ड परीक्षाओं को ज्ञान-आधारित बनाना तथा रटने के बजाय समझ और तार्किक सोच पर ध्यान केंद्रित करना।

मातृभाषा या स्थानीय भाषा का महत्व: कक्षा 5 तक की शिक्षा स्थानीय भाषाओं में होगीए जिससे छात्रों की समझ बेहतर होगी।

व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण : कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा शुरू होगीए जिससे छात्रों के कौशल विकास में मदद मिलेगी।

उच्च शिक्षा में लचीलापन: 4 वर्षीय स्नातक डिग्री का विकल्प और बीच में प्रमाण पत्र या डिप्लोमा के साथ बाहर निकलने की सुविधा।

डिजिटल शिक्षा और प्रौद्योगिकी: शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देना और डिजिटल शिक्षा को मजबूत करना।

बहुविषयक शिक्षा: कलाए विज्ञान और वाणिज्य को अलग-अलग पढ़ने के बजाय एक साथ पढ़ने का अवसर।

भारतीय संस्कृति और मूल्यों पर जोर: छात्रों को भारतीय संस्कृति और मूल्यों से जोड़नाए साथ ही उनमें नैतिकता और संवेदनशीलता का विकास करना।

इस प्रकारए नई शिक्षा नीति एक दूरदर्शी पहल है जिसका उद्देश्य भारत को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुसार ढालना हैए लेकिन इसकी सफलता के लिए ठोस बुनियादी ढांचे और प्रभावी समन्वय की आवश्यकता है।

उद्देश्य -

1. सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी छात्रों को समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।

2. शिक्षा को केवल डिग्री तक सीमित रखने के बजाय जीवन कौशल, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमताओं के विकास पर ध्यान केंद्रित करना।

3. विषयों के बीच लचीलापन लाना और छात्रों को अपनी पसंद के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता देना।

4. शिक्षा में स्थानीय भाषाओं और भारतीय ज्ञान परंपराओं को बढ़ावा देना।

5. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी (जैसे AI ) को एकीकृत करना तथा कोडिंग जैसी गतिविधियों को शामिल करना।

6. 0-8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए एक मजबूत, खेल-आधारित और गतिविधि-आधारित प्रारंभिक शिक्षा ढांचा विकसित करना।

7. शिक्षा को जीवन और रोजगार से जोड़ना, व्यावसायिक कौशल विकसित करना और कृषि जैसे क्षेत्रों में शिक्षा को मजबूत करना।

8. शिक्षक प्रशिक्षण और निरंतर व्यावसायिक विकास पर जोर देना।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से स्कूली शिक्षा प्रणाली और समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नैतिकता और मूल्यों को पुनः स्थापित किया गया है। मूल्य नैतिकता को शैक्षिक और सामाजिक दोनों आधारों पर उपयोगी और व्यावहारिक बनाने पर जोर दिया गया है। राष्ट्रीय मूल्यों, आदर्शों, विचारों, विश्वासों और मानकों को प्राप्त करने और बनाए रखने के लिए नैतिकता और मूल्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव जीवन के दो मुख्य लक्ष्यों पर जोर देती है: खुशी और समृद्धि। खुशी के लिए आध्यात्मिक मूल्यों को महत्व दिया गया है, जिसका आधार नैतिकता और मूल्य हैं। समृद्धि के लिए सैद्धांतिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास को महत्व दिया गया है। ताकि व्यक्ति भौतिक सुख प्राप्त कर सके और आर्थिक रूप से समृद्ध बन सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समस्त मानव जीवन के मूल्यों और नैतिकता को मूर्त रूप देती है। जो भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं हस्तांतरण के लिए बहुत आवश्यक होगी । यह शिक्षा नीति मूल्यों और नैतिकता के विकास के लिए उपयोगी सिद्ध होगी तथा भविष्य में इसके दूरगामी

परिणाम सामने आएंगे। इससे मूल्यों और नैतिकता को स्थापित करने तथा भारत को एक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र बनाने में मदद मिलेगी।

ग्रंथ सूची:


1. कुमार बी. (1988 ) स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक विचार नई दिल्ली: भारतीय विद्यापीठ ।

2. सक्सेना एन.आर. (1979 ) शिक्षा दर्शन का स्वरूप मेरठ: नेशनल पब्लिशिंग हाउस ।

3. तोमर एमएल (2014 ) भारतीय शिक्षा के मूल तत्व नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन।

4.https//www.hindisamay.com/e&content/mulya&Aadharit%20Shiksha%20by20Ramesh%20PoKhariyaliji1-Pdf

5 .https//wwweducation.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_Hindi_o.Pdf